भारतीय इतिहास में बंगाल विभाजन : एक त्रासदी

अशोक कुमार
Lect. in History M.A. , NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सारः–

साम्राज्यवादी देश बिट्रेन की कूटनीति के तहत भारत में हिन्दू – मुस्लिम एकता को तोड़ने का सबसे बड़ा प्रयत्न सन् 1905 ई0 में बंगाल विभाजन के रूप में किया गया । भारतीय इतिहास में 'तिरस्कार, मानहानि और धोखा ' के नाम से प्रसिद्ध 1905 का 'बंगाल विभाजन ' भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम उत्ताल तंरग था। बंगाल विभाजन से भारत की राष्ट्रीय एकता पर कठोर प्रहार किया गया ताकि हिन्दू–मुस्लिम के बीच सम्प्रदायिकता[1] का बीज बोकर भारत को आंतरिक रूप से कमजोर बना दिय जाए। लार्ड कर्जन द्वारा 1905 ई0 में किया गया बंगाल विभाजन का गम्भीर परिणाम 1947 में पृथक देश पाकिस्तान के रूप में उभरकर सामने आया।

मूल शब्दः–

साम्राज्यवादी देश , राष्ट्रीय आन्दोलन , राष्ट्रीय एकता , साम्प्रदायिकता , बंगाल विभाजन ।

भूमिका :–

1733 ई0 में किया गया संयुक्त बंगाल प्रांत का निर्माण 1905 ई0 तक अविभाज्य रहा। 1903 ई0 में बंगाल के गवर्नर सर एण्ड्रयू फ्रेजर ने बंगाल के विभाजन का प्रस्ताव रखा जिसे अंतिम रूप वर्तमान वायसरास लार्ड कर्जन ने दिया। वस्तुतः बंगाल विभाजन 'विलियम बार्ड' की दिमागी उपज थी। यह विभाजन कांग्रेस की बढ़ती शक्ति को क्षीण करने , राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर बनाने तथा भारत में साम्प्रदायिकता को और अधिक फैलाने के उददेश्य से किया गया था ताकि हिन्दू और मुस्लमान आपस में एक दूसरे के दुश्मन बन जाए[3] और ब्रिटेन की कूट नीति ''फूट डालो और राज करो '' सफल हो सके । अंग्रेजों की प्रशासनिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण बंगाल के लोगों में अंग्रेजों के विरूद्ध ज्यादा रोष था तथा कलकत्ता के राजधानी होने के कारण यहां पश्चिमी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग की अधिकता भी थी जिसके कारण वे राजनीतिक क्षेत्र में काफी सक्रिय हो गए थे और इस कारण बंगाल पूरे हिन्दूस्तान की राजनीति आंदोलन का केन्द्र बन गया था।

परिणामस्वरूप लार्ड कर्जन ने राष्ट्रीयता को खण्डित करने हेतू मुस्लिम प्रधान पूर्व बंगाल को अलग कर उसे हिन्दू प्रधान पश्चिमी बंगाल के खिलाफ खडा करने की कोशिश की ।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध पत्र , ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं । वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितियक आकड़ों पर आधारित हैं।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैः–

1. बंगाल विभाजन के कारणों को समझना।

2. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बंगाल विभाजन की भूमिका को जानना।
3. बंगाल विभाजन के भारत पर प्रभावों का उल्लेख करना।

तत्कालीन बंगाल प्रांत का क्षेत्र बिहार , असम , बांग्लादेश तथा उड़ीसा तक विस्तृत था। जिसका क्षेत्रफल 189000 वर्ग किलोमीटर तथा इसकी कुल जनसंख्या 8.5 करोड़ थी। 1905 ई0 में लार्ड कर्जन ने ''प्रशासनिक सीमाओं के पुनर्व्यवस्थापन'' का हवाला देते हुए पूर्वी बंगाल तथा असम को एक नया प्रांत बनाया। जिसमें राजशाही , ढ़ाका तथा चटगांव के तीन डिविजन शामिल थे। इसका क्षेत्रफल 1,06,540 वर्ग कि0मी0 तथा इसकी जनसंख्या 310 लाख थी जिसमें केवल 120 लाख हिन्दू थे। इसका मुख्यालय ढाका बनाया गया । दूसरी ओर प0 बंगाल , बिहार तथा उड़ीसा को मिलाकर एक अलग प्रांत बनाया गया जिसका क्षेत्रफल 1,41,580 वर्ग कि0 मी0 तथा जनसंख्या 540 लाख थी जिसमें से 420 लाख हिन्दू थे तथा 90 लाख मुस्लमान थे[5]।

प्रारम्भ में तो 1905 ई0 तक भारतीयों को इस भ्रम में रखा गया कि बंगाल विभाजन की घोषणा त्याग दी गई हैं परन्तु एकदम 7 जुलाई , 1905 ई0 को शिमला से बंगाल विभाजन की सरकारी घोषणा कर दी गई । 20 जुलाई 1905 ई0 को विभाजन की सम्पूर्ण योजना लागू होना निश्चित हुआ[7]।

बंगाल विभाजन ने राष्ट्रीय एकता पर कठोर प्रहार किया था तथा हिन्दू – मुस्लिम एकता को तोड़ने की कोशिश की गई थी। बंगाल में साम्प्रदायिकता का बीज बोकर कर्जन ने भारत में सबसे पहले पृथक मुस्लिम क्षेत्र बनाने का रास्ता साफ कर दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप बंगाल प्रांत में इस निर्णय का कड़ा विरोध किया गया[4]। देशभक्त बंगालियों ने इसे अपना अपमान समझा तथा अपनी परम्परा , इतिहास , भाषा व संस्कृति पर कुठाराघात माना। विरोध की पहली शुरूआत विक्रम से हुई । विभिन्न वर्गों के लोगों ने इसका विरोध भिन्न – भिन्न कारणों से किया।

1. सामान्य जनता के भय था कि उन्हें अब नौकरी नहीं मिलेगी इसलिए मध्यम वर्ग में बंगाल विभाजन का विरोध किया ।
2. व्यापारियों ने इसका विरोध इसलिए किया कि इसके कारण उनका चावल उद्योग प्रभावित हो रहा था।
3. भू–स्वामियों के विरोध का कारण था कि राज्य को दो भागों में बांटने से उन्हें भूमि सुरक्षा की असुविधा होगी तथा उन्हें दो क्षेत्रों में अलग–अलग लोगों को नियुक्त करना होगा।
4. वकीलों ने इसका विरोध किया क्योंकि दो न्यायालय होने पर उनका काम कम हो जाता ।
5. राजनीतिज्ञों ने विरोध किया , क्योंकि राजनीतिज्ञों को परिषद की व्यवस्था बनाने में कठिनाई होती ।

वस्तुत भारतीयों ने उपर्युक्त कारणों के अलावा बंगाल विभाजन का विरोध कर्जन की प्रतिगामी नीति के कारण भी किया । उसने एक निजी गोपनीय पत्र में 17 फरवरी , 1904 को भारत सचिव को लिखा था –''ये बंगाली आपको एक राष्ट्र मानते हैं और वे उस समय का स्वप्न देख रहे हैं जब अंग्रेज यहाँ से निकाल दिए जा चुके होंगें और कलकत्ता के राज भवन में एक बंगाली बाबू बैठा होगा , वे लोग निश्चय ही अपने इस स्वप्न को साकार करने में किसी बाधा को उपस्थित करने को अच्छा नहीं मानते । यदि हमने इस समय तनिक भी शिथिलता दिखाई और उनके शोर से हम पीछे हट गए , तो हम बंगाल को पुनः कभी भी जीतने में सफल नहीं होंगें।''

कांग्रेस ने अपने 1903 से 1906 तक के प्रत्येक सत्र में बंग–भंग का विरोध किया तथा इसे रदद् करने की मांग[6] की , प्रैस ने भी बंगाल विभाजन पर तीक्ष्ण प्रहार किए।

इसके विरोध में बंगाल में लगभग 2000 जनसभाएं की गई जिसमें लोगों की उपस्थिति 500 से 50,000 तक रही। कलकत्ता के टाउन हॉल में 5 जनसभा हुई जिसमें संयुक्त बंगाल के हिन्दू – मुस्लमान,राजा–महाराजा,नवाब–जमींदार ,शिक्षित –अशिक्षित सभी लोगों ने भाग लिया। ''ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन '' तथा ''बंगाल लैण्ड होल्डर एशोसिएसन '' जैसे संगठनों ने भी बंगाल विभाजन का विरोध कर इसे रदद् करने की मांग की । 70,000 लोगों के हस्ताक्षर का एक आवेदन–पत्र भारत सचिव को भेजा गया । आंदोलन काफी लोकप्रिय हो गया सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी ने कहा – ''जिस प्रकार चार्ल्स प्रथम तथा पार्लियामेंट के बीच संघर्ष की कथा इंग्लैण्ड के हर घर के चुल्हे तक पहुंच गई , वहीं स्थिति बंगाल विभाजन की भी हो गई हैं।''

प्रारम्भिक विरोधों के बावजूद जब यह विभाजन रदद् नहीं हुआ तो ''स्वदेशी व बहिष्कार[2] '' का नारा बुलन्द हुआ जिसकी घोषणा कृष्ण कुमार मित्र ने 'संजीवनी' नामक पत्रिका से की । लाल मोहन घोष ने अमृत बाजार पत्रिका में कहा –''सरकार का साथ देना बंद करे , अवैतनिक मजिस्ट्रेट , जिला बोर्डो तथा पंचायतों के सदस्य एक साथ इस्तीफा दे , साथ दी बारह महीने का राष्ट्रीय शोक मनायाजाए। '' इसी से संबंधित अनेक सभाएं – पबाना , फरीदपुर , तगाइल , मगुड़ा , मैमन सिंह , मानिक गांव , ढाका आदि स्थानों पर हुई । सभी सभाओं में ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा राष्ट्रीयता का नारा बुलन्द किया गया। बंग–भंग आंदोलन में छात्रों की भागीदारी सराहनीय रही। 7 अगस्त को लगभग 50,000 छात्रों ने शांतिपूर्ण ढंग से काले झण्डे लिए रैलिया निकाली तथा विरोध स्वरूप लार्ड कर्जन के पुतले फूंके गए। 'प्रिन्स ऑफ वेल्स' के भारत आने का विरोध किया गया । रविन्द्रनाथ टैगोर , रजनीकांत सेन , बंकिमचन्द्र चटर्जी आदि कवियों ने देश प्रेम की कविताओं के द्वारा आन्दोलनकारियों का जोश बढाया । 16 अक्तूबर को जिस दिन विभाजन होना था , रविन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाल को मजबूत करने हेतू 'रक्षाबंधन' मनाने की घोषणा की।

16 अक्तूबर को सम्पूर्ण बंगाल में हड़ताल हुई , नौजवानों ने प्रभात फेरियां निकाली ,वंदे मातरम् के नाम से पूरा बंगाल गूँज उठा। फेडरल हाल में आनन्द मोहन बोस की अध्यक्षता में 60,000 लोगों की एक सभा हुई जिसमें पूर्ण स्वदेशी आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया गया तथा विदेशी बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देने का निश्चय किया गया । लार्ड कर्जन ने मुस्लमानों को इस आन्दोलन से दूर रखनेकी कोशिश की परन्तु काफी संख्या में राष्ट्रवादी मुस्लमान भी इसमें शामिल हुए । अब्दुल रसूल , लियाकत हुसैन , अब्दुल रहीम गजनबी , युसूफ बहादुर खान , मुहम्मद इस्माइल चौधरी आदि नेताओं ने आन्दोलन में हिन्दूओं का साथ दिया।

इस प्रकार बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन का समर्थन सभी वर्गों ने किया । इस आन्दोलन ने लोगों में राष्ट्र प्रेम , सांस्कृतिक मान्यता और भावात्मक एकता को बढ़ावा दिया। बंगाल विभाजन राष्ट्रीय आन्दोलन में मील का पत्थर साबित हुआतथा इसी के अंतर्गत राष्ट्रीय संग्राम में एकता की जो नई परिभाषा बनी वह तीन–तीन आन्दोलन को अपने में समाहित किए हुए थी। ये थे – स्वदेशी आन्दोलन , बहिष्कार आन्दोलन तथा उग्रवादी आन्दोलन ।

स्वदेशी आन्दोलन के कारण स्वदेशी लघु उद्योगों का विकासहुआ । लोगों में समाजवादी विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ । आत्म निर्भरता तथा आत्म शक्ति का नारा देश में बुलंद हुआ तथा लोगों में स्वावलम्बन तथा स्वाभिमान की भावनाजगी। राष्ट्रीय शिक्षा का सर्वाधिक विकास इसी दौरान हुआ। बंगाल नेशनल कॉलेज , राष्ट्रीय शिक्षा परिषद , बंगाल तकनीकी संस्थान आदि राष्ट्रीय संगठनों की स्थापना हुई।

लेकिन इस आन्दोलन से साम्प्रदायिकता का जो छुटपुट विकास हुआ उसकी चरम परिणति दिसम्बर 1906 ई0 में मुस्लिम लीग की स्थापनाके रूप में हुई जिसका गठन बंगाल में ही हुआ क्योंकि मुस्लमानों के एक बड़े भाग में बंगाल विभाजन आन्दोलन में भाग नहीं लिया था । इसी के परिणाम स्वरूप 1907 ई0 में बंगाल में भीषण दंगा हुआ और मौके का फायदा उठाकर 1909 ई0 के मार्ले मिण्टों अधिनियम में मुस्लमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था कर दी। राजनीति में धर्म के प्रवेश की यह घटना भारत को आज तक प्रभावित करती आ रही हैं।

हालांकि बंगाल विभाजन 1911 ई0 में लार्ड हार्डिंगद्वारा रदद् कर दिया गया[8] ,पर भारतीय इतिहास में यह महत्वपूर्ण घटना सिद्ध हुई तथा भविष्य में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर इसका व्यापक असर पड़ा।

संदर्भ सूचिः–

1. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष , बिपिन चन्द्र , Page-85
2. आधुनिक भारत,सुमित सरकार , Page – 130
3. Glimpses of Indian National Movement – Abel M
4. The Spoils of Partition : Bengal and India , 1947-1967 Page - 5 , 9
5. आधुनिक भारत का इतिहास : एक नवीन मूल्यांकन बी.एल.ग्रोवर , अलका मेहता , यशपाल , S.Chand Publication Page – 219
6. Partition of Bengal : Significant Signposts , 1905-1911, Nityapriya Ghosha , Ashoka Kumar Mukhopadhyaya – 2005 Page – 39
7. New ICSE History and Civics – Page H-45
8. Bengal Partition Stories : An Unclosed Chapter , Bashabi Frases , Page – 57
9. Pratiyogita Darpan: General Studies , Indian History – Page – 118
10. The Indian Nationalist Movement 1885-1947 Select documents , Edited by B.N. Pandey Page -33